कुख्यात सूरजपाल अम्मू को हाथ लगाने से क्यों डर रही है पुलिस

इंडरी महापंचायत के वीडियो बने सबूत, फिर भी हरियाणा सरकार चुप

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

नूंह (मेवात): मेवात में साम्प्रदायिक सौहार्द को बिगाड़ने के लिए आयोजित की गई इंडरी महापंचायत को करीब दस दिन हो चुके हैं लेकिन पुलिस ने अभी तक उस शख्स सूरजपाल अम्मू को गिरफ्तार नहीं किया है, जिसने महापंचायत में जहर उगला था। पुलिस यह तो कह रही है कि हमने वीडियो से उसकी पहचान कर ली है लेकिन इस मामले में पुलिस का ऐक्शन शून्य है। आखिर क्या वजह है जो मेवात का पुलिस प्रशासन करणी सेना के अध्यक्ष सूरजपाल अम्मू पर हाथ डालने से डर रही है। मजदूर मोर्चा ने इसकी पड़ताल की है।

हरियाणा के मुस्लिम बहुल इलाके मेवात में तनाव कायम है। आसिफ हत्याकांड में आरोपियों को छोड़ने की मांग को लेकर हिन्दुओं की महापंचायत के जवाब में मुसलमानों ने महापंचायत करने से साफ मना कर दिया है। इस सिलसिले में खुद भाजपा से जुड़े मेवात के नेता कोशिश कर रहे थे, लेकिन उनकी कोशिशों को यहां की जनता ने एकजुट होकर नाकाम कर दिया है। अगर मेव महापंचायत होती तो इससे माहौल और खराब हो सकता था।

करनी सेना का अध्यक्ष सूरजपाल अम्मू इंडरी महापंचायत में साम्प्रदायिक जहर उगलता हुआ

यह फोटो सूरजपाल अम्मू से भाजपा के रिश्तों को बताता है। गुड़गांव में एक कोविड सेंटर शुरू होने के मौके पर अम्मू (सफेद शर्ट और जीन्स में) हरियाणा भाजपा अध्यक्ष ओमप्रकाश धनखड़ के साथ। साथ में भाजपा विधायक रेखा शर्मा

भड़काऊ भाषण देने वालों पर चुप्पी क्यों

महापंचायत में करणी सेना के अध्यक्ष सूरज पाल अम्मू का भाषण सबसे ज्यादा उकसाने वाला था। लेकिन सत्ता से करीबी की वजह से पुलिस उस पर हाथ नहीं डाल रही है। करीब तीन महीने पहले सूरज पाल अम्मू के बेटे की रहस्यमय हालात में मौत हो गई थी। अम्मू गुड़गांव में रहता है। उसके घर पर शोक जताने के लिए हरियाणा के गृह मंत्री अनिल विज, कई बड़े पुलिस अधिकारी और संघ-भाजपा के नेता पहुंचे थे। गुड़गांव में तमाम कार्यक्रमों में उसे भाजपा नेताओं के साथ कुर्सी मिलती है। मजदूर मोर्चा के सामने ऐसा ही एक फोटो आया, जिसमें वह कोविड सेंटर शुरू किए जाने के मौके पर हरियाणा प्रदेश अध्यक्ष ओमप्रकाश धनखड़ के बगल खड़ा हुआ नजर आया। फोटो में विधायक रेखा शर्मा भी नजर आ रही हैं।

नीचे के स्तर पर काम करने वाले पुलिस अधिकारी ये सब जानते हैं। इसलिए वे अम्मू जैसे तत्वों पर हाथ नहीं लगाते। विदित हो कि जब पद्मावत फिल्म के विरोध में करणी सेना सक्रिय हुई थी तो आरोप है कि इसी सूरजपाल अम्मू के निर्देश पर गुड़गांव में एक प्राइवेट स्कूल की बस को असामाजिक तत्वों ने निशाना बनाया था। बस में स्कूल के बच्चे और महिला टीचर भी थीं। वे इस घटना से बहुत भयभीत हुईं। पुलिस ने आजतक इस मामले में सूरजपाल अम्मू के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की। अम्मू की कुल राजनीति यह है कि फिल्म, पेंटिंग या अन्य सांस्कृतिक मुद्दों पर पहले आरएसएस ऐतराज जताता है, उसके बाद करणी सेना अचानक ही सक्रिय हो जाती है। खुफिया एजेंसियों के पास इस बात की पुख्ता जानकारी तो नहीं है कि आरएसएस ने ही करणी सेना को खड़ा किया है, लेकिन उनके अधिकारी मानते हैं कि संघ और करणी सेना का कुछ रिश्ता जरूर है।

इस बीच मेवात में रहने वाले चौधरी आमिर खान का कहना है कि अगर सूरजपाल अम्मू का इलाज नहीं हुआ तो आने वाले दिनों में मेवात का अमन-चैन, हिन्दू-मुस्लिम भाईचारा बर्बाद हो जाएगा। जो शख्स थाना फूंकने की खुलेआम धमकियां दे रहा हो, सोशल मीडिया पर तमाम वीडियो वायरल हैं। मेवात पुलिस की खामोशी समझ से बाहर है। अजहर नामक युवक ने कहा कि महापंचायत में एक विशेष समुदाय के खिलाफ भड़काऊ शब्दों का प्रयोग करना, गलियां देना मेवात के हिंदू मुस्लिम भाईचारे के लिए खतरा है। दंगाइयों के भड़काऊ भाषणबाजी के खिलाफ पुलिस प्रशासन को संज्ञान लेना चाहिए और इनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाए। हालांकि मेवात के एसपी ने एक टीवी चैनल को बताया कि उन्होंने वीडियो के जरिए सूरजपाल अम्मू के भाषणों की तस्दीक कर ली है। हम जल्द ही कार्रवाई करेंगे।

चार आरोपियों को बताया निर्दोष

16 मई को रोजका मेव थाने के तहत पड़ने वाले गांव खेड़ा खलीलपुर में जिम ट्रेनर आसिफ की दो दर्जन लोगों ने पीट-पीट कर हत्या कर दी थी। आसिफ अपनी मां की दवाई लेकर घर लौट रहा था। इस घटना में आसिफ के दो भाई भी घायल हो गए थे, जो इस घटना के चश्मदीद भी हैं। उनकी शिकायत पर पुलिस ने 14 लोगों के खिलाफ नामजद और 20 अन्य के खिलाफ एफआईआर दर्ज की। पुलिस ने 13 मुलजिमों को गिरफ्तार किया। लेकिन महापंचायत के बाद पुलिस ने चार आरोपियों महेन्द्र, अनूप, संदीप और राजकुमार को निर्दोष बताया है। पुलिस ने मंगलवार यानी 8 जून को नूंह जिला कोर्ट में इनकी डिस्चार्ज रिपोर्ट पेश कर दी है। ये वे चार मुलजिम हैं, जिन्हें पुलिस ने शुरुआत में गिरफ्तार किया था। इनके अलावा मुख्य आरोपी प्रदीप उर्फ पटवारी, अडवाणी, भीम, ऋषि, सोनू, कोंटा, बल्ला, नत्थू, कुलदीप, को बाद में गिरफ्तार किया था। महापंचायत के बाद आसिफ का परिवार गांव खेड़ा खलीलपुर छोड़कर किसी अन्य जगह रहने चला गया है। परिवार का कहना है कि महापंचायत में जिस तरह हमें जान से मारने और पुलिस थाना फूंकने की धमकियां दी गईं, उससे हम डरे हुए हैं। परिवार का आरोप है कि महापंचायत के बाद कुछ युवकों ने उनके घर के आसपास भी उन धमकियों को दोहराया। इनमें गांव के एक-दो ही युवक शामिल थे। अधिकांश लोग बाहर से बुलाए गए थे। आसिफ का परिवार पुलिस कार्रवाई से संतुष्ट नजर आ रहा है। उसका कहना है कि पुलिस की तरफ से कार्रवाई में कमी नहीं है लेकिन बाहर के लोग यहां आकर जो माहौल बिगाड़ रहे हैं, वो तनाव को कम नहीं होने दे रहे हैं।

पुलिस की मौजूदगी में थाना फूंकने की धमकी

इंडरी महापंचायत की जो फोटो और वीडियो सामने आए, वे भयावह थे। 30 मई को हुई यह महापंचायत पहली नहीं थी। इससे पहले ऐसी छह पंचायतें हो चुकी थीं, जिनमें समुदाय विशेष के खिलाफ माहौल बिगाड़ने की पूरी कोशिश की गई। इंडरी की महापंचायत बाकायदा पहले से ऐलान करके की गई। हिन्दुओं की भावनाओं को उकसाते हुए इस महापंचायत के पोस्टर सोशल मीडिया पर डाले गए थे। इसके बावजूद लोकल पुलिस और हरियाणा सरकार होश में नहीं आई। धारा 144 टूटती रही और पंचायतें होती रहीं। लेकिन इंडरी महापंचायत में जब करणी सेना का अध्यक्ष सूरजपाल अम्मू, बिट्टू बजरंगी और आरएसएस से जुड़े लोग जब पहुंचे तो मामला तूल पकड़ गया। इंडरी गांव के संगम स्कूल में यह महापंचायत अरुण जैलदार नामक शख्स की अध्यक्षता में हुई थी।

इस भड़काऊ महापंचायत में गिरफ्तार हिन्दू युवकों को न छोड़े जाने पर थाना फूंकने तक की धमकी मंच से दी गई। लगभग हर नेता ने भड़काऊ भाषण दिए। महापंचायत स्थल पर पुलिस मौजूद थी लेकिन उसने न तो किसी को रोकने की कोशिश की और न ही बाद में कार्रवाई की। लॉकडाउन की वजह से पूरे हरियाणा में धारा 144 लगी हुई है और चार से ज्यादा लोगों के एक जगह जमा होने पर मनाही है। लेकिन इंडरी महापंचायत में सारे नियम टूट गए। महापंचायत में यूपी से भी लोगों को बुलाया गया था।

महापंचायत में दी गई धमकी के विरोध में हाई कोर्ट के वकील फारुख अब्दुल्लाह ने महापंचायत में भड़काऊ भाषण और उसके आयोजन को लेकर एसपी मेवात और डीजीपी हरियाणा को लीगल नोटिस भेजा है।

मेवात की अजीबोगरीब राजनीति

मेवात में दो घराने चौधरी खुर्शीद अहमद और चौधरी तैयब हुसैन पुराने प्रतिद्वंदी हैं और इन्हीं दोनों परिवारों के इर्द-गिर्द राजनीति घूमती रही है। इनमें से जो घराना कांग्रेस में होता है तो दूसरा घराना विपक्षी दल में होता है। दोनों ही दिग्गज मेवाती नेता अब मरहूम हो चुके हैं लेकिन उनके बेटे उसी लीक पर चल रहे हैं। खुर्शीद अहमद के बेटे आफताब अहमद इस वक्त नूंह से कांग्रेस विधायक हैं। तैयब हुसैन के बेटे पूर्व विधायक जाकिर हुसैन कई दलों से होते हुए अब भाजपा में हैं और हाल ही में उन्हें भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा का राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बनाया गया है।

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बनते ही जाकिर को इंडरी महापंचायत के जवाब में मेव महापंचायत करने के जरिए खुद को मेवात में लॉन्च करने का मौका मिला। सूत्रों ने बताया कि उन्होंने मेव बिरादरी के सभी पाल में अपने दूतों के जरिए मेव महापंचायत करने और इसका जवाब देने के संदेश भेजे गए। लेकिन हर जगह से जाकिर खेमे को नाकामी मिली। लोगों ने ऐसी किसी मेव महापंचायत में हिस्सा लेने से मना कर दिया।

लोगों का कहना था कि जवाबी महापंचायत कराकर हम लोगों को कमजोर करने की कोशिश की जा रही है। क्योंकि जो गलती इंडरी महापंचायत में हिन्दू संगठन कर चुके हैं, वही गलती हम नहीं दोहराना चाहते हैं। पुलिस अभी जो कार्रवाई आसिफ की हत्या के सिलसिले में कर रही है, वह फौरन पीछे हट जाएगी। मेव महापंचायत कराकर हालात सुधरने के बजाय बिगड़ेंगे। लोगों का कहना है कि गोसेवा आयोग का पूर्व चेयरमैन भानीराम मंगला राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जाकिर हुसैन के आगे-पीछे चल रहा है, जबकि उसके गोरक्षक दल मेवात के हालात को बिगाड़ने में लगे रहते हैं। ऐसे में हम लोग किस पर भरोसा करें।

इंक़लाबी मज़दूर केंद्र के उपाध्यक्ष कॉमरेड नगेंद्र का निधन

फ़रीदाबाद, (ममो) बेहद दुःखद सूचना है कि इंकलाबी मज़दूर केंद्र के उपाध्यक्ष व नागरिक पत्रिका के संपादक कॉमरेड नागेंद्र का 10 जून की रात 47 वर्ष की अल्पायु में निधन हो गया है। वह पिछले 2 साल से अधिक समय से कैंसर के असाध्य रोग से जूझ रहे थे।

अपने छात्र जीवन से ही क्रांतिकारी आंदोलन में सक्रिय कामरेड नगेंद्र का पूरा जीवन अपनी अंतिम सांस तक क्रांति के उद्देश्यों के प्रति समर्पित रहा।

आज मजदूर आंदोलन के एक कठिन चुनौतीपूर्ण दौर में कॉमरेड नगेंद्र का जाना मज़दूर आंदोलन और कम्युनिस्ट आंदोलन के लिए अपूरणीय क्षति है। उनके अधूरे कामों को आगे बढ़ाना और मज़दूर वर्ग की मुक्ति के सपनों को पूरा करने का संकल्प लेना ही कॉमरेड नागेंद्र के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

फ़रीदाबाद पुलिस को हिन्दी के क्रैश कोर्स की सख्त ज़रूरत सोशल मीडिया पर उसके बिगड़ते बोल

मज़दूर मोर्चा ब्यूरो

फ़रीदाबाद : हमारे शहर की पुलिस का फूहड़ हिन्दी ज्ञान सोशल मीडिया पर लगातार बढ़ता जा रहा है। वह नए नए शब्द तलाशकर अपनी फूहड़ हिन्दी को सोशल मीडिया पर मज़बूत कर रही है। अच्छी पुलिस कैसी होती है, कैसे तैयार की जाती है, जैसे विषयों पर अंग्रेज़ी में लेख लिखने वाले फ़रीदाबाद के पुलिस कमिश्नर ओ. पी. सिंह जिस टीम का नेतृत्व कर रहे हैं, उन्हें उनकी हिन्दी की चिन्ता नहीं है। ओपी सिंह जिस बिहार राज्य से आते हैं वहाँ की मुख्य भाषा हिन्दी ही है। उसी बिहार ने हिन्दी साहित्य को एक से एक लेखक, कवि, शायर दिए हैं जिन्होंने हिन्दी को बुलंदियों पर पहुँचाया लेकिन पुलिस कमिश्नर की टीम जिस हिन्दी को फ़रीदाबाद में परवान चढ़ा रही है, वो दुखद है।

यहाँ पर हम फ़रीदाबाद पुलिस की हिन्दी का नमूना पेश कर रहे हैं, जिसे उसने चंद घंटे पहले अपने ट्विटर हैंडल पीपल्स पुलिस - फ़रीदाबाद पुलिस पर ट्वीट किया है। यह नमूना भर है। अगर कुछ अन्य ट्वीट को पढ़ा जाए तो उनकी हिन्दी इससे भी घटिया है। इतना ही नहीं अपराध की सूचना देते समय

तथ्यों की जानकारी की बजाय कल्पनाशीलता का सहारा लिया जा रहा है। अपराध की सूचना में कल्पनाशीलता अपने आप में अपराध है। यह हम नहीं अदालत का कहना है।

फ़रीदाबाद पुलिस की भाषा और कल्पनाशीलता का सबसे ताज़ा नमूना 11 जून को भी मिला। पुलिस दीपक नामक आरोपी को पकड़ा। लेकिन ट्वीट में उसे सीधे डाकू लिखा गया है। अभी किसी अदालत ने इस आरोपी को डाकू नहीं कहा है लेकिन पुलिस ने अपना फ़ैसला सुना दिया है। हालाँकि कंक्रीट के जंगल में पुलिस को डाकू मिल रहे हैं, यह ताज्जुब की बात है। अभी तक तो डाकुओं के बीहड़ में होने की बात सुनते थे।

इसके अलावा बड़ी चतुराई से इसी ट्वीट में फेविकोल शब्द का इस्तेमाल भी किया गया है। फेविकोल एक प्रसिद्ध प्रोडक्ट है। लेकिन फ़रीदाबाद पुलिस उसका मुफ़्त प्रचार कर रही है। इसके अलावा भी भाषा की बानगी इस ट्वीट में देखी जा सकती है।

मज़दूर मोर्चा ने पहले भी फ़रीदाबाद पुलिस की हिन्दी और कुछ समुदायों को लेकर उसकी पूर्वाग्रह से ग्रसित हिन्दी पर सवाल उठाए थे। लेकिन इधर फिर से अपराध की सूचना देने में ग़लत और फूहड़ हिन्दी का इस्तेमाल हो रहा है। सोशल मीडिया पर फ़रीदाबाद पुलिस की हिन्दी के शिल्पकार ओपी सिंह ने कई किताबें हिन्दी में लिखी हैं। अगर सोशल मीडिया पर हिन्दी को वो अच्छा मानते हैं तो अपनी हिन्दी में लिखी गई किताबों में फिर इसी तरह की हिन्दी का इस्तेमाल करना चाहिए था।